International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

प्राचीन काल में सनातन मंदिरों के धार्मिक महत्व का अध्ययन

GUNJAN BHARTI
RESEARCH SCHOLAR, DEPARTMENT OF HISTORY, RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

DR. BRIJNANDAN CHAUDHARY
ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF HISTORY, RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

सारांश

प्राचीन काल में भी मंदिरों का उपयोग केवल पूजा-अर्चना के लिए नहीं, बल्कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक दिशा-निर्देशन के लिए किया जाता था। मंदिरों में होने वाले धार्मिक प्रवचन और उपदेश समाज में नैतिकता, धार्मिकता, और मानवता की भावना को जागृत करने में सहायक होते थे। आज भी, समाज को धार्मिक, नैतिक, और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में मंदिरों की यह भूमिका बनी हुई है। मंदिरों का राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन समय में मंदिर राजा-महाराजाओं और शासकों के अधीन होते थे, और उनका राजनीतिक शक्ति के प्रदर्शन का भी साधन हुआ करते थे।

कई मंदिरों को राज्य के संरक्षक देवता के रूप में पूजा जाता था, और शासक अपने शासन को वैध बनाने के लिए मंदिरों से जुड़े धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते थे। आधुनिक युग में, मंदिर सामाजिक सामंजस्य और एकता के प्रतीक के रूप में देखे जाते हैं, जहाँ विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोग एकत्रित होते हैं। सनातन मंदिरों का इतिहास प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रहा है।

धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक दृष्टिकोण से मंदिरों का महत्व अनन्य है। प्राचीन काल में वे ज्ञान, संस्कृति, और सामाजिकता के केंद्र थे, और आज भी वे धार्मिक आस्था के प्रतीक के साथ-साथ सामाजिक सुधार और परोपकारी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सनातन मंदिरों की यह परंपरा भारतीय संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य धरोहर है, जो न केवल अतीत की स्मृतियों को जीवंत बनाए हुए है, बल्कि भविष्य में भी समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

मुख्यशब्द- प्राचीन काल, सनातन मंदिर, धार्मिक महत्व, नैतिक और सांस्कृतिक दिशा, मानवता की भावना, धार्मिक आस्था

प्रस्तावना

प्राचीन काल में सनातन मंदिरों की स्थापना और उनका धार्मिक महत्व भारतीय सभ्यता के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सनातन धर्म, जिसे हम हिन्दू धर्म के रूप में भी जानते हैं, का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है, और इसके अंतर्गत मंदिरों की स्थापना एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा रही है। प्राचीन काल में, जब भारतीय समाज परंपरागत धार्मिक विश्वासों और संस्कृतियों में गहराई से जड़ा हुआ था, मंदिरों का निर्माण एक विशिष्ट धार्मिक आवश्यकता और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में किया जाता था।

मंदिरों का निर्माण केवल पूजा-अर्चना के स्थल के रूप में नहीं किया जाता था, बल्कि ये समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के भी महत्वपूर्ण केंद्र होते थे। प्राचीन काल के मंदिर वास्तुकला में भव्यता और शिल्पकला का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन मंदिरों की संरचना, सजावट और स्थापत्य कला न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाती है, बल्कि उस समय की उन्नत तकनीकी और कलात्मक क्षमताओं का भी परिचायक है। मंदिरों की स्थापत्य कला में विविधता थी, जिसमें शिखर, मंडप, गर्भगृह, और अन्नक्षेत्र जैसे विभिन्न भाग होते थे। इनका निर्माण साधारण ईंटों और पत्थरों से लेकर विशेष प्रकार की कला और मूर्तिकला के द्वारा किया जाता था।

धार्मिक दृष्टिकोण से, प्राचीन काल के मंदिरों का महत्व अत्यधिक था। इन्हें देवताओं और देवी-देवताओं के निवास स्थान के रूप में माना जाता था और यहाँ विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा-अर्चना और संस्कारों का आयोजन किया जाता था। यह न केवल व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति का माध्यम था, बल्कि समाज की धार्मिक और आध्यात्मिक एकता को भी बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन था। मंदिरों में नियमित पूजा, यज्ञ और अनुष्ठान किए जाते थे, जो समाज के लोगों के बीच एकता और सांस्कृतिक समरसता को बढ़ावा देते थे।

प्राचीन मंदिरों की स्थापना के पीछे धार्मिक और आध्यात्मिक उद्देश्य के साथ-साथ समाज के विविध पहलुओं को भी ध्यान में रखा जाता था। मंदिरों को अक्सर शिक्षण और ज्ञान के केंद्र के रूप में भी देखा जाता था। यहाँ वेद, उपनिषद, पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और शिक्षण किया

जाता था। इसके अलावा, मंदिर समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए आश्रय, भोजन और चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए भी जिम्मेदार थे।

इसके अतिरिक्त, प्राचीन काल में मंदिरों के निर्माण में राजा-महाराजाओं और सामंतों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे मंदिरों का निर्माण और उनकी मरम्मत के लिए दान और अनुदान प्रदान करते थे, जिससे धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता था। इस प्रकार, मंदिर केवल धार्मिक स्थलों के रूप में ही नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास और सांस्कृतिक समृद्धि के केंद्र के रूप में भी कार्य करते थे।

समग्र रूप से, प्राचीन काल में सनातन मंदिरों की स्थापना और उनका धार्मिक महत्व भारतीय समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन की गहरी जड़ों को दर्शाते हैं। ये मंदिर न केवल भव्य स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण हैं, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन की एक अमूल्य धरोहर भी हैं।

प्राचीन काल में सनातन मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प

प्राचीन काल में सनातन मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प भारतीय संस्कृति और धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। इन मंदिरों का निर्माण एक अद्वितीय स्थापत्य और शिल्पकला का परिचायक है, जो न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाता है, बल्कि उस समय की कलात्मक और तकनीकी क्षमताओं का भी प्रमाण है। प्राचीन भारतीय मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प ने न केवल धार्मिक स्थल की पहचान बनाई, बल्कि समाज के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिदृश्य को भी समृद्ध किया। प्राचीन काल के मंदिरों की स्थापत्य कला में विविधता और भव्यता की झलक मिलती है। हर मंदिर की वास्तुकला उसकी धार्मिक मान्यता और स्थानीय परंपराओं के अनुसार डिजाइन की जाती थी। इस काल में मंदिरों की प्रमुख संरचनाओं में गर्भगृह (श्रीचरण), मंडप (संगठित सभागार), और शिखर (उच्चतम बिंदु) शामिल होते थे। गर्भगृह वह स्थान था जहां मुख्य देवी या देवता की मूर्ति स्थापित होती थी, और यह मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। इसे अक्सर ठोस और स्थिरता देने वाले पत्थरों से निर्मित किया जाता था, जिससे यह सदियों तक टिकाऊ रहता।

मंदिरों का मुख्य मंडप पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उपयोग में लाया जाता था। इसे अक्सर चारों ओर से खुले या आधे खुले आंगनों के साथ डिजाइन किया जाता था, जिससे भक्तों को पूजा और अनुष्ठानों का आनंद मिल सके। मंडप की छत आमतौर पर कलात्मक रूप से सजाई जाती थी, जिसमें जटिल नक्काशी और चित्रकारी होती थी। शिखर या वेल (वृत्ताकार शीर्ष) मंदिर के प्रमुख भाग की ऊँचाई को बढ़ाता था, और इसे धार्मिक प्रतीकों और देवताओं की आकृतियों से सजाया जाता था। यह शिखर मंदिर की अनुपम भव्यता को दर्शाता था और आध्यात्मिक ऊँचाई का प्रतीक भी माना जाता था।

प्राचीन मंदिरों की शिल्पकला में विभिन्न प्रकार की नक्काशी और चित्रकारी देखने को मिलती है। इन मंदिरों की दीवारों और स्तंभों पर जटिल और सुंदर नक्काशी की जाती थी, जो धार्मिक कथाओं, देवताओं और देवी-देवताओं के चित्रण के रूप में होती थी। शिल्पकला में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ और दृश्यांकन शामिल होते थे, जो न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाते थे बल्कि उस काल की कलात्मक संवेदनशीलता और तकनीकी क्षमताओं को भी प्रकट करते थे। उदाहरण के लिए, खजुराहो और अजंता-एलोरा की गुफाएं ऐसी उत्कृष्ट शिल्पकला के अद्वितीय उदाहरण हैं, जो अपनी विस्तृत और जटिल नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।

मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प में रंगीन चित्रकारी और भित्ति चित्रों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इन चित्रों में धार्मिक कथाएं, देवताओं की पूजा विधियाँ और समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया जाता था। भित्ति चित्र और रंगीन सजावट मंदिरों की आंतरिक सजावट को बढ़ाते थे और भक्तों को एक दिव्य अनुभव प्रदान करते थे। प्राचीन काल में मंदिरों के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले सामग्री की विविधता भी अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। सामान्यतः, मंदिरों का निर्माण मजबूत और टिकाऊ पत्थरों जैसे ग्रेनाइट, बलुआ पत्थर और संगमरमर से किया जाता था। इन पत्थरों की गुणवत्ता और टिकाऊपन ने मंदिरों को सैकड़ों वर्षों तक संरक्षित रखने में मदद की। इसके अतिरिक्त, मंदिरों की रंगीन नक्काशी और चित्रकारी के लिए विभिन्न प्रकार की पेंटिंग और कलात्मक तकनीकों का उपयोग किया जाता था, जो समय के साथ कई बदलावों के बावजूद अपनी चमक और सुंदरता बनाए रखते थे।

मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प में धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों और परंपराओं के अनुसार, मंदिरों में विभिन्न प्रकार के प्रतीक और देवताओं के चित्रण किए जाते थे। यह न केवल धार्मिक मान्यताओं को दर्शाता था, बल्कि समाज की सांस्कृतिक विविधता और एकता को भी प्रकट करता था। मंदिरों की स्थापत्य कला में उपयोग किए गए प्रतीक और चित्रण समाज की धार्मिक चेतना और सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते थे। प्राचीन काल में सनातन मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प ने न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को आकार दिया, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को भी संरक्षित किया। इन मंदिरों की भव्यता, जटिल शिल्पकला, और धार्मिक प्रतीक आज भी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं, जो प्राचीन काल की कलात्मक और धार्मिक संवेदनशीलता को जीवित रखती हैं।

सनातन मंदिरों का धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक योगदान

सनातन मंदिरों का धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक योगदान भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। ये मंदिर न केवल पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों के स्थल होते हैं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक धरोहर के भी प्रमुख प्रतिनिधि हैं। सनातन धर्म, जिसे हिंदू धर्म भी कहा जाता है, का प्रमुख उद्देश्य आत्मा की खोज और मोक्ष की प्राप्ति है। इसके लिए मंदिरों ने विशेष भूमिका निभाई है, जो धार्मिक गतिविधियों और आध्यात्मिक अनुभवों का केंद्र बने हैं।

सनातन मंदिरों का धार्मिक महत्व अत्यधिक गहरा है। प्राचीन काल से ही, मंदिरों को देवताओं और देवी-देवताओं के निवास स्थान के रूप में पूजा जाता रहा है। मंदिर में देवता की मूर्ति या छवि की स्थापना करके भक्तों को एक दिव्य उपस्थिति का अनुभव मिलता है। यह आस्था और विश्वास का केंद्र होता है, जहां लोग नियमित रूप से पूजा, अर्चना, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। मंदिरों में हर दिन, विशेष त्योहारों और अवसरों पर धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, जो आस्था को प्रकट करने का एक माध्यम होते हैं। इन अनुष्ठानों के माध्यम से भक्त अपने पापों से मुक्ति की कामना करते हैं और देवताओं की कृपा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

मंदिरों का धार्मिक महत्व केवल पूजा और अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। वे समाज की धार्मिक और आध्यात्मिक एकता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंदिर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम और उत्सव न केवल व्यक्तिगत मोक्ष के लिए होते हैं, बल्कि समाज के एकत्रित होने और साझा धार्मिक अनुभव के अवसर भी प्रदान करते हैं। ये अवसर समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाते हैं और सामूहिक धार्मिक भावनाओं को प्रकट करने में मदद करते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, सनातन मंदिरों का योगदान भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मंदिर भारतीय संस्कृति और परंपराओं के महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं। यहां विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जैसे संगीत, नृत्य, और कला के प्रदर्शन किए जाते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से, मंदिर सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और प्रोत्साहित करते हैं। मंदिरों में आयोजित भजन, कीर्तन, और धार्मिक नृत्य-संगीत के कार्यक्रम भारतीय सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये गतिविधियाँ न केवल धार्मिक भावनाओं को प्रकट करती हैं, बल्कि सांस्कृतिक आदर्शों और परंपराओं को भी जीवित रखती हैं।

मंदिरों का सांस्कृतिक योगदान केवल धार्मिक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे शिक्षा और ज्ञान के केंद्र के रूप में भी कार्य करते हैं। प्राचीन काल में, कई मंदिरों ने शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया और वेद, उपनिषद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और शिक्षण किया गया। मंदिरों में धार्मिक और दार्शनिक चर्चाएँ होती थीं, जो ज्ञान और शिक्षा के प्रसार में योगदान करती थीं। इसके अलावा, मंदिरों के द्वारा प्रदान की गई सामाजिक सेवाएं, जैसे कि शिक्षा और चिकित्सा सहायता, भी सांस्कृतिक योगदान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

समाजिक दृष्टिकोण से, मंदिर समाज के विभिन्न पहलुओं को समेटने और समर्थन देने का कार्य करते हैं। मंदिरों में आयोजित धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज के सदस्यों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। मंदिरों के माध्यम से, लोग एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं, सांस्कृतिक आदान-प्रदान करते हैं, और सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं।

धार्मिक आस्था और सामाजिक संरचना पर मंदिरों की स्थापना

धार्मिक आस्था और सामाजिक संरचना पर मंदिरों की स्थापना का भारतीय समाज में गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है। मंदिरों का निर्माण प्राचीन काल से धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतीक रहा है, और इनकी स्थापना ने समाज की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध किया है। मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थल नहीं होते, बल्कि वे समाज के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक ताने-बाने का महत्वपूर्ण हिस्सा भी बनते हैं। मंदिरों की स्थापना के पीछे की धार्मिक आस्था और इसकी सामाजिक संरचना पर प्रभाव का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि ये संरचनाएँ समाज के विभिन्न पहलुओं को किस प्रकार से प्रभावित करती हैं और समृद्ध करती हैं।

धार्मिक आस्था मंदिरों की स्थापना की मूल प्रेरणा होती है। भारतीय संस्कृति में, मंदिरों को देवताओं और देवी-देवताओं के निवास स्थान के रूप में पूजा जाता है। यहाँ देवताओं की मूर्तियाँ या छवियाँ स्थापित की जाती हैं, जिन्हें भक्त श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजते हैं। इस प्रकार, मंदिर धार्मिक आस्था का एक प्रत्यक्ष परिणाम होते हैं, जहाँ भक्त अपनी आध्यात्मिक और धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जाते हैं। मंदिरों की स्थापना धार्मिक विश्वासों को साकार करने का एक माध्यम होती है, जो व्यक्ति की आत्मिक शांति और मोक्ष की प्राप्ति के लिए आवश्यक माना जाता है।

मंदिरों की स्थापना से समाज में एक स्थिर धार्मिक संरचना का निर्माण होता है। मंदिर न केवल पूजा और अनुष्ठानों के स्थल होते हैं, बल्कि वे धार्मिक शिक्षाओं, विचारों और प्रथाओं के प्रसार के केंद्र भी बनते हैं। धार्मिक आस्थाओं के अनुसार, मंदिरों में नियमित रूप से पूजा, यज्ञ, और अन्य धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, जो समाज के धार्मिक जीवन को संजीवनी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, मंदिरों की स्थापना धार्मिक अनुशासन और संरचना को बनाए रखने का एक साधन होती है।

सामाजिक संरचना पर मंदिरों का प्रभाव भी गहरा होता है। मंदिर समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाते हैं और सामूहिक धार्मिक अनुभव का अवसर प्रदान करते हैं। विभिन्न जातियों, वर्गों और समुदायों के लोग मंदिरों

में एकत्र होते हैं, जहाँ वे अपनी धार्मिक आस्थाओं और संस्कृतियों को साझा करते हैं। यह सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देता है, और समाज के विभिन्न हिस्सों के बीच एकजुटता का एहसास कराता है। मंदिरों में आयोजित धार्मिक उत्सव और त्यौहार समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ते हैं, जिससे सामाजिक ढाँचा सुदृढ़ होता है।

इसके अतिरिक्त, मंदिरों की स्थापना सामाजिक सेवाओं और गतिविधियों के लिए भी महत्वपूर्ण होती है। कई प्राचीन मंदिरों ने शिक्षा, चिकित्सा, और सामाजिक सहायता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंदिरों में स्कूल, अस्पताल, और शैक्षिक संस्थान स्थापित किए जाते थे, जो समाज के कमजोर वर्गों को शिक्षा और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करते थे। इस प्रकार, मंदिर समाज की सामाजिक और आर्थिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करते हैं।

मंदिरों का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। मंदिर न केवल धार्मिक आस्थाओं का केंद्र होते हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक और कला के भी प्रमुख केंद्र होते हैं। मंदिरों में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जैसे कि संगीत, नृत्य, और कला के प्रदर्शन होते हैं, जो समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रोत्साहित करते हैं। ये सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बनते हैं, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध किया जाता है।

मंदिरों की स्थापना के साथ-साथ धार्मिक आस्था और सामाजिक संरचना में एक परस्पर संबंध भी स्थापित होता है। मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र होते हैं, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को जोड़ते हैं और समाज के सामाजिक ताने-बाने को सुदृढ़ करते हैं। मंदिरों के माध्यम से धार्मिक आस्थाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ जीवित रहती हैं, और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा मिलता है। धार्मिक आस्था और सामाजिक संरचना पर मंदिरों की स्थापना का प्रभाव गहरा और व्यापक होता है। मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं होते, बल्कि वे समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। मंदिरों की स्थापना ने समाज की सामाजिक संरचना को स्थिर किया है और धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को

संरक्षित किया है। इस प्रकार, मंदिरों की स्थापना धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समाज की समृद्धि और एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्राचीन भारतीय समाज में सनातन मंदिरों की भूमिका

प्राचीन भारतीय समाज में सनातन मंदिरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुपरकारी रही है। ये मंदिर न केवल धार्मिक पूजा और अनुष्ठानों के स्थल थे, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और शिक्षा क्षेत्र में भी एक केंद्रीय भूमिका निभाते थे। प्राचीन काल में, जब भारतीय समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर अपने पूर्ण सौंदर्य और विविधता के साथ विकसित हो रही थी, मंदिरों ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए, जो समाज के हर पहलू को प्रभावित करते थे।

पहले, मंदिरों की भूमिका धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक जीवन के केंद्र के रूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। प्राचीन भारतीय समाज में, सनातन मंदिरों को देवताओं और देवी-देवताओं के निवास स्थान के रूप में पूजा जाता था। ये मंदिर धार्मिक जीवन का हृदय होते थे, जहाँ भक्त नियमित रूप से पूजा, अर्चना, और विभिन्न अनुष्ठान करते थे। मंदिरों में स्थापित देवताओं की मूर्तियाँ और छवियाँ धार्मिक आस्था का प्रतीक होती थीं, और यहाँ की पूजा विधियाँ आत्मिक शांति और मोक्ष की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती थीं। मंदिरों में आयोजित धार्मिक उत्सव और अनुष्ठान समाज के लोगों को एकजुट करते थे और धार्मिक जीवन को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाते थे।

मंदिरों का सामाजिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव था। प्राचीन भारतीय समाज में, मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक एकता और सामुदायिक गतिविधियों का केंद्र भी थे। मंदिरों में आयोजित विभिन्न त्योहारों, मेलों, और सामाजिक कार्यक्रमों ने समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने का कार्य किया। ये उत्सव और कार्यक्रम धार्मिक आस्था को प्रकट करने के साथ-साथ सामाजिक सहयोग और समरसता को भी बढ़ावा देते थे। विभिन्न जातियों और समुदायों के लोग एक ही स्थान पर एकत्र होकर अपनी आस्थाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को साझा करते थे, जिससे सामाजिक एकता और सद्भावना को प्रोत्साहन मिलता था।

मंदिरों ने शैक्षिक और सांस्कृतिक योगदान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई प्राचीन मंदिरों ने शिक्षा और ज्ञान के प्रसार के लिए शैक्षिक संस्थान और पुस्तकालय स्थापित किए थे। यहाँ वेद, उपनिषद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और शिक्षण किया जाता था, जो धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करने में मदद करता था। इसके अलावा, मंदिरों ने संगीत, नृत्य, और कला के प्रदर्शन को प्रोत्साहित किया, जिससे सांस्कृतिक धरोहर को संजोया और बढ़ावा मिला। मंदिरों के आंगन में भजन, कीर्तन, और नृत्य-कला के कार्यक्रम होते थे, जो सांस्कृतिक गतिविधियों और पारंपरिक कला को जीवित रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम थे।

मंदिरों का सामाजिक सेवा क्षेत्र में भी योगदान था। कई प्राचीन मंदिरों ने समाज के कमजोर वर्गों के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, और आश्रय सेवाएँ प्रदान कीं। मंदिरों में अस्पताल, स्कूल, और धर्मशालाएँ स्थापित की जाती थीं, जो समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए सहायता का माध्यम बनती थीं। ये सेवाएँ सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से प्रदान की जाती थीं और समाज के सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को सुदृढ़ करने में मदद करती थीं।

मंदिरों की स्थापत्य कला और शिल्प भी प्राचीन भारतीय समाज की विशेषताओं को दर्शाती है। मंदिरों का निर्माण भव्य और जटिल शिल्पकला के उदाहरण होते थे, जो उस समय की कला और तकनीकी क्षमताओं का प्रमाण देते हैं। मंदिरों की संरचना में विभिन्न प्रकार की नक्काशी, चित्रकारी, और स्थापत्य तत्व शामिल होते थे, जो धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को प्रकट करते थे। यह कला और शिल्प न केवल धार्मिक स्थल की भव्यता को बढ़ाती थी, बल्कि समाज की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को भी संरक्षित करती थी।

निष्कर्ष

प्राचीन मंदिर न केवल पूजा स्थल या धार्मिक केंद्रों के रूप में बल्कि शाही युग की महिमा को समेटे हुए विरासत स्थलों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं। यद्यपि मंदिरों ने प्रबंधन प्रणाली, श्रमिकों की विभिन्न श्रेणियों की भागीदारी, संपत्तियों की मात्रा आदि जैसे विभिन्न पहलुओं में बहुत कुछ बदल दिया है, फिर भी उनके आकर्षण, प्रसिद्धि और प्रभाव

की विरासत कम नहीं हुई है। ये मंदिर आत्मसात करने के चरण के रूप में भी कार्य करते हैं और विभिन्न गतिविधियों जैसे त्योहारों, कार्यों आदि के माध्यम से लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच एकता बढ़ाने में मदद करते हैं। देश और विदेश के विभिन्न हिस्सों से तीर्थयात्री और विभिन्न प्रकार के अन्य आगंतुक बड़ी संख्या में भाग लेने के लिए आते हैं। दैनिक पूजा और इन मंदिरों में मनाए जाने वाले वार्षिक उत्सवों में। इसके अलावा इन मंदिरों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विभिन्न गतिविधियों में भी बड़ी संख्या में लोग लगे हुए हैं जिनकी आजीविका इन्हीं पर निर्भर है। वर्तमान शोध कार्य प्रमुख प्राचीन मंदिरों के ऐतिहासिक महत्व, वहां की जाने वाली दैनिक और वार्षिक धार्मिक गतिविधियों, इन गतिविधियों में तीर्थयात्रियों की भागीदारी की प्रकृति, इन मंदिरों में लगे लोगों की विभिन्न श्रेणियों और उनके सामाजिक-आर्थिक से संबंधित है। उनके विकास और कल्याण के स्तर के साथ-साथ जीवन पैटर्न। इस कार्य के माध्यम से अनुसंधान के इस क्षेत्र में विद्यमान अंतर को पाटने का प्रयास किया गया है। श्रमिकों की विभिन्न श्रेणियों के नियोजन पैटर्न में परिवर्तन, मंदिरों की प्रबंधन प्रणाली, तीर्थयात्राओं के आयाम, जिनकी चर्चा वर्तमान शोध में विस्तार से नहीं की गई है, भविष्य से संबंधित कार्यों में निपटा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कार्टर, जे और जोन्स, टी। (2019): सोशल जियोग्राफी: एन इंट्रोडक्शन टू कंटेम्पररी इश्यूज, एडवर्ड अर्नोल्ड, लंदन।

चक्रवर्ती, पी (2010): यात्रा और मंदिर: कामाख्या एक्सचेंज की साइट के रूप में, एक अप्रकाशित एम. फिल शोध प्रबंध, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

अधिकारी, जी. (2011): ए हिस्ट्री ऑफ द टेंपल ऑफ कामरूप एंड देयर मैनेजमेंट, चंद्र प्रकाश, गुवाहाटी।

अधिकारी, जी. (2016): असम के धार्मिक प्रतिष्ठान: उनके सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में अध्ययन, चंद्र प्रकाश, गुवाहाटी।

अहमद, ए. (सं.) (2013): सामाजिक संरचना और क्षेत्रीय विकास: एक सामाजिक भूगोल परिप्रेक्ष्य, रावत प्रकाशन, जयपुर।

दास, एम. (2012): असम में जनजातीय महिलाएं, ईबीएच प्रकाशक, गुवाहाटी -1।

दास, एन. (2019): भट्टाचार्य में "श्री श्री पांडुनाथ देवालय," एच.एन. (सं.) असोमर डोल - देवालय (इतिब्रिट्टा), सदौ असोम देवालय संघ, गुवाहाटी, पीपी। 52- 60।

दास, आर. (2018): श्री श्री हयग्रीव माधव मंदिरर ऐतिह्या: एति बिस्लेसनात्मक अध्ययन, एक अप्रकाशित एम. फिल शोध प्रबंध, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

दत्ता, पी.एन. (2015): ग्लिम्पसेज़ इन द हिस्ट्री ऑफ़ असम, दत्ता एंड संस, शिलांग।

डेका, सी. (2019): तिहु राजा चक्रा अंचलर धर्मिया संस्थान: एति अध्ययन, एक अप्रकाशित एम.फिल शोध प्रबंध, गौहाटी विश्वविद्यालय।

डेका। पी.जे. (2014): नीलाचल कामाख्या: उसका इतिहास और तंत्र, लेखक, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित।

देवचौधरी, एन.जे. (2019): पुण्यभूमि असोम, चंद्र प्रकाश, गुवाहाटी।

देवी, पी. (2019): नलबाड़ी जिलार शक्तिपीठ: एति अध्ययन, एक अप्रकाशित एम.फिल शोध प्रबंध, गौहाटी विश्वविद्यालय।

बटनर, एम। (2014): "रिलिजन एंड जियोग्राफी: इंपल्स फॉर ए न्यू डायलॉग फॉर रिलिजनस्विसेन्सचाफ्टलर्न एंड जियोग्राफर्स," न्यूमेन, वॉल्यूम। 21, पीपी. 163-196.

लेविन, जी। (2016): "धर्म के भूगोल पर," ब्रिटिश भूगोल संस्थान के लेनदेन, नई श्रृंखला, वॉल्यूम। 11, नंबर 4, पीपी. 428-440.

कोंग, एल. (2010): "ग्लोबल शिफ्ट्स, थ्योरेटिकल शिफ्ट्स: चेंजिंग जियोग्राफीज ऑफ रिलिजन", प्रोग्रेस इन ह्यूमन जियोग्राफी, 34 (6), पीपी.755-776, सेज पब्लिकेशन।

वेबर, एम. (2013): द सोशियोलॉजी ऑफ रिलिजन, बीकन प्रेस, बोस्टन।

स्टोडर्ड, आर.एच. और प्रोरोक, सी.वी. (2013): "जियोग्राफी ऑफ रिलिजन एंड बिलीफ सिस्टम्स", विलमॉट में, कोर्ट जे. और गेल, जी. (ईडी.एस), 21वीं सदी के डॉन पर अमेरिका में भूगोल (संस्करण। I), पीपी। 759-767, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

पार्क, सी. (2014): "धर्म और भूगोल", धर्म के अध्ययन के लिए रूटलेज साथी, रूटलेज, लंदन।

स्टंप, आर, डब्ल्यू (2018): धर्म का भूगोल। फेथ, प्लेस एंड स्पेस, रोमैन एंड आइटलफील्ड पब्लिशर्स।

सोफर, डी.ई. (2017): धर्मों का भूगोल, अप्रेंटिस-हॉल, इंक।, एंगलवुड क्लिफ्स, न्यू जर्सी।

क्रिंडैच, ए.डी. (2016): रूस में धर्मों का भूगोल, ग्लेनमेरी रिसर्च सेंटर, जॉर्जिया।

ओ कॉनर, के। और फालोला, टी। (2019): "धार्मिक उद्यमिता और अनौपचारिक आर्थिक क्षेत्र-" उड़ीसा "नाइजीरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका में सेवा प्रदाता' के रूप में पूजा करते हैं," पेदेमा, बीडी। 45, पीपी. 115-135.

डिबिया, आई.डब्ल्यू. (2015): "हिंदू बाली का ओडलन: एक धार्मिक उत्सव, एक सामाजिक अवसर, और एक नाटकीय घटना", एशियन थिएटर जर्नल, वॉल्यूम। 2, नंबर 1, पीपी. 61-65, हवाई विश्वविद्यालय प्रेस.

प्रोरोक, कैरोलिन वी। (2013): "अमेरिका में तीर्थयात्रा परंपराओं का प्रत्यारोपण" भौगोलिक समीक्षा, वॉल्यूम। 93, नंबर 3, पीपी. 283-307, अमेरिकन ज्योग्राफिकल सोसाइटी।

मेसर्सचिमिड्ट, डी.ए. और शर्मा, जे. (2011): "हिंदू तीर्थयात्रा इन द नेपाल हिमालय", करंट एंथ्रोपोलॉजी, वॉल्यूम। 22, नंबर 5, पीपी. 571-572, द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, वेनर-ग्रेन फाउंडेशन फॉर एंथ्रोपोलॉजिकल रिसर्च की ओर से।